ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

उत्तराखंड के सामाजिक एवं राजनीतिक परिदृश्य में महिलाओ की भूमिका-

डॉ दयाधर प्रसाद सेमवाल

सहायक प्राध्यापक इतिहास विभाग , श्री गुरुराम राय पी. जी. कॉलेज, देहरादून

किसी भी सभ्यता की आत्मा को समझने तथा उसकी उपलब्धियों एव श्रोत का मुल्यांकन करने का सर्वोतम आधार उस सभ्यता में महिलाओ की स्थिति होती है। महिलाओ की स्थिति किसी भी देश की संस्कृति का मानदंड मानी जाती है। भारत देश अनादिकाल से ही महिलाओ के प्रति सम्मान के लिए विश्व प्रसिद्ध रहा है। भारत की प्रथम सभ्यता सिन्धु सभ्यता का मात्रसत्तामक होना इस सम्मान एवं श्रेष्ठता का घोतक है। भारतीय समाज के निर्माण एवं विकास में प्रारंभ से ही महिलाओ का अतुलनीय योगदान रहा है। इसलिए हिन्दू धर्म महिलाओ को देवतुल्य मानते हुए उन्हें पूजनीय माना गया है। प्राचीन स्मृति मनुस्मृति में महिलाओ की महत्ता का वर्णन करते हुए लिखा है-

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते,रमन्ते तत्र देवताः,

यत्रतास्तु न पूज्यन्ते,सर्वासस्ताफला; क्रिया।

जहाँ महिलाओ की पूजा होती है वहीं देवता निवास करते हैं,जहाँ महिलाओ की पूजा नही होती वहाँ के सभी कार्य बेकार हो जाते है,पूजा का अर्थ सम्मान से है। तात्पर्य यह है कि जहाँ नारी का सम्मान होता है वंही सुख व समृद्धि का वास होता है। लेकिन समयानुसार नारी सम्मान का ग्राफ गिरने लगा है। वैदिक काल की सम्मानित नारी सतयुग त्रेता-द्वापर आते-आते अपनी पुरानी सम्मानजनक अवस्था में नही रही। कलयुग में तो नारी का असम्मान अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँच गया भारत में मुगलों के पदार्पण ने नारी को भोग एवं हरम की वस्तु बना डाला तब से इन का सम्मान लगातार गिरता गया दूसरी तरफ पश्चिमी सभ्यता एवं संस्कृति ने एक ओर जहा नारी के स्वतंत्रता को नया स्वर प्रदान किया वहीं दूसरी ओर उसके खुलेपन के नाम पर भोग –विलास की वस्तु बना डाला

भारत देश में मुगलों के पदार्पण ने नारी को भोग व हरम की वस्तू बना डाला.तब से नारी का सम्मान निरन्तर घिरत गया. दूसरी तरफ पश्चिमी सभ्यता एवं सस्कृत ने एक ओर जहाँ नारी की स्वतंत्रता को नया स्वर प्रदान किया,वहीं दूसरी ओर उसके खुलेपन के नाम पर भोग –विलास की वस्तू बना डाला और आज उसके मूल चरित्र ,आभूषण ,लज्जा ,मर्यादा एवं सम्मान की धज्जियां उड़ रही हैं |आज कोई विज्ञापन शायद ही नारी के बिना पूर्ण होता है |आज आवश्कता है नारी के सम्मान बचने की ,इतिहास साक्षी है की नारी ने देस की आन बान सान के लिए अपने प्राण को न्यूछावर कर दिया था , जिसमे पदमनी, चाँदद्बिबी, रजिया ,लक्ष्मीबाई ,अहिल्याबाई कस्तूरबा गाँधी ,सुचेता कृपलानी, सरोजनी नायुडू भला कौन भुला सकता है|

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

देवभूमि उत्तराखंड में भी समाज के निर्माण एवं विकास में तथा समाज के मार्ग प्रशस्त करने में यहाँ की महिलाओ का सर्वाधिक सार्थक प्रयास रहा है | उत्तराखंड के विकास एवं अनान्य योजनायें जल ,जमीन ,जंगल ,शराब बंदी एवं राज्य निर्माण के लिए महिलाओ के बलिदान व त्याग को कदापि नही भुलाया जा सकता है|

उत्तराखंड की यह भूमि अनादिकाल से ही ऋषिमुनियो की तपस्थली के साथ देव दानव की रंग स्थली ,एवं वीरांगनाओं की सृजनस्थली रही है | इनमें चाहे चोद्हवी शताब्दी के कत्तुरी सम्राट प्रीतम देव की रानी जियारानी जिन्हें कुमाऊ में न्याय की देवी माना जाता है,ने रोहिलो एवं तुर्कों के आक्रमण का डटकर मुकाबला किया था या रानी कर्णावती जिसने जुलाई 1531 में अल्मोड़ा युद्ध में महाराजा महीपति शाह के देहावसान हो जाने के पश्चात कर्णावती ने अपने पुत्र युवराज पृथ्वीपति शाह के वयस्क होने तक गढ़वाल राज्य का शासन सम्भाला एवं अपनी आज्ञा का उलंघन करनेवालो की नाक़ कटवा देने की प्रथा शुरू की और नाक़ काटने वाली रानी के नाम से विख्यात हुई. और मूगल सेना को पराजित कर अपने शोर्य एवं पराक्रम का परिचय दिया | या अपूर्व शोर्य ,संकल्प और साहस की धनी तिलु-रौतेली को गढ़वाल के इतिहास मैं झाँसी की रानी के नाम से जाना जाता है ,ने 15 से 22 वर्ष की आयु में सात युद्धों को लड़ते हुए कत्यूरियों को परास्त कर अपने पिता थोकदार भूपसिंह व अपने पति का बदला लिया |

देश के स्वंतत्रता में सरला बहन(मिस केथरीन हाई लामन) ने उत्तराखंड के गाँव-गाँव में जाकर स्वतंत्रता आन्दोलन के लिए पुरुष एवं महिलाओ को एक जुट किया | फिर विशनी देवी शाह जिसे स्वतंत्रता संग्राम के समय जेल जाने वाली प्रथम महिला होने का श्रेय प्राप्त हुआ है, के नेतृत्व में 1930 ईसा में अल्मोड़ा नगर पालिका परिषद में झंडा फेहराया था ,या कुंती वर्मा जिसने आजादी की लड़ाई में सक्रिय भागीदारी की और 1932 में विदेशी वस्तुओ के खिलाफ धरना दिया तथा कई बार जेल गयी है | इनके अतिरिक्त उत्तराखंड की हजारो महिलाये हैं जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है |

लेखन में विद्यावती डोबाल ,जिन्हें गढ़वाल की पहली महिला लेखिका कवियत्री एवं समाजसेविका होने का गौरव प्राप्त है, श्रीमती चन्द्रावतीलखनपाल जो सुप्रसिद्ध लेखिका स्वतंत्रता सेनानी एवं शिक्षिका रही है श्रीमती लक्ष्मी देवी टम्टा स्नातक उपाधि लेने वाली उत्तराखंड की प्रथम दलित महिला होने का गौरव प्राप्त हुआ है |डॉ दम्पति कपूर जो साहित्यकार ,इतिहासकार के रूप में जानी जाती है | इन सभी ने अपने लेखन द्वारा उत्तरखंड व्याप्त कुप्रथाओ के प्रति ध्यान आकृष्ट करके इनमे सुधर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है |

समाजसेवा के क्षेत्र में ठगुली देवी जो मात्र 17 वर्ष की आयु में विधवा हो गयी थी ने अपना सम्पूर्ण जीवन समाज को समर्पित कर दिया |तत्कालीन समय में गढ़वाल में शराब के नाम पर चल रही टीन्चरी का विरोध किया व अकेले ही टीन्चरी(शराब)की दुकानों में आग लगा दी | इसीलिए ये टीन्चरी माई के नाम से प्रसिद्ध हुई या फिर रैणी गाँव की गोरा देवी जो चिपको आन्दोलन की सूत्रधार रही हैं| 20 वर्ष की आयु में विधवा हो गयी थी | 26 मार्च 1974 को गाँव के पुरुष गाँव के बाहर थे और ठेकेदार के आदमी वनों का कटान

ISSN NO.2395-0692
IJAHMS International Journal of Arts, Humanities and Management Studies

करने आ गये थे,तो गोरा देवी के नेतृत्व में गाँव की महिलाये पेड़ो पर चिपक गयी जिससे वन काटने वालो को वापस जाना पड़ा और पेड़ काटने से बच गए |

इनके अतिरिक्त उत्तराखंड राज्य निर्माण आन्दोलन में महिलाओ ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया | 2 सितम्बर 1994 को मसूरी में पुलिस फाइरिंग में मारे गए 8 आन्दोलनकारियों में दो महिलाये हंशा धनाई व बेल्मती चौहान शहीद हुई थी | इनके अतिरिक्त कमला पन्त,सुशीला बलोनी,कौशल्या डबराल,शुभाषिनी बर्त्वाल आदि अनेक उत्तराखंड की महिलाओ ने राज्य निर्माण में अपनी भूमिका का कुशलता पूर्वक निर्वहन कर भावी पीढियों के लिए प्रेरणा श्रोत का कार्य किया |

इस प्रकार उत्तराखंड के समाज निर्माण एवं विकास में महिलाओ का अतुलनीय योगदान रहा हैं| सभी क्षेत्रो सामाजिक,राजनीतिक,सांस्कृतिक में महिलाओ ने अपनी कुशलता का परिचय दिया है| आज आवश्यकता है की नारी के सम्मान को पुन: जागृत करने की, इसके लिए समाज एवं स्वयं नारी को अपने को बदलने की आवश्कता है, जिससे मात् शक्ति सशक्त बने तथा समाज का सर्वांगीन विकास हो सके|

संदर्भ ग्रन्थ

i. श्रीवास्तव,के.सी.2000. प्राचीन भारत का इतिहास एवं सस्कृति,यूनाइटेड बुक डिपो इलाहाबाद |
ii. शर्मा एल.पी.2003,मध्य कालीन भारत, नवरंग ओफ्सेट प्रिंटर्स आगरा |
iii. चन्द्र बिपिन 1995,भारत का स्वतत्रता संघर्ष,दिल्ली विश्व विद्यालय दिल्ली ||
iv. सक्सेना वंदना ,2004 महिलाओ का संसार और अधिकार,मनीषा प्रकाशन दिल्ली ||
v. रतूड़ी हरिकृष्ण,1995,गढ़वाल का इतिहास,भागीरथी प्रकाशन टिहरी |
vi. डबराल शिवप्रसाद,संवत 2033 टिहरी गढ़वाल का इतिहास भाग-7 वीरगाथा प्रकाशन दुगड्डा कोटद्वार |
vii. डबराल शिव प्रसाद,संवत 2035,उत्तराखंड का इतिहास भाग-8 वीरगाथा प्रकाशन दुगड्डा कोटद्वार ||
viii. नैथानी शिव प्रसाद 1982,उत्तराखंड सस्कृति साहित्य एवं पर्यटन,सरस्वती पब्लिकेशन श्रीनगर |
ix. पाठक शेखर,1987,उत्तराखंड में कुली बेगार प्रथा,दरिया गंज नई दिल्ली |
x. मेहरा सुरेन्द्र सिंह 2001,मध्य हिमालय की रियासतों में शासन प्रबंध और समाज,तक्षशिला प्रकाशन नई दिल्ली |
xi. पण्डे बद्री दत्त,1937,कुँमाऊ का इतिहास,प्रेमकुट्टी अल्मोड़ा ||

www.ijahms.com